CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक मुसाफिर · एक दुनिया

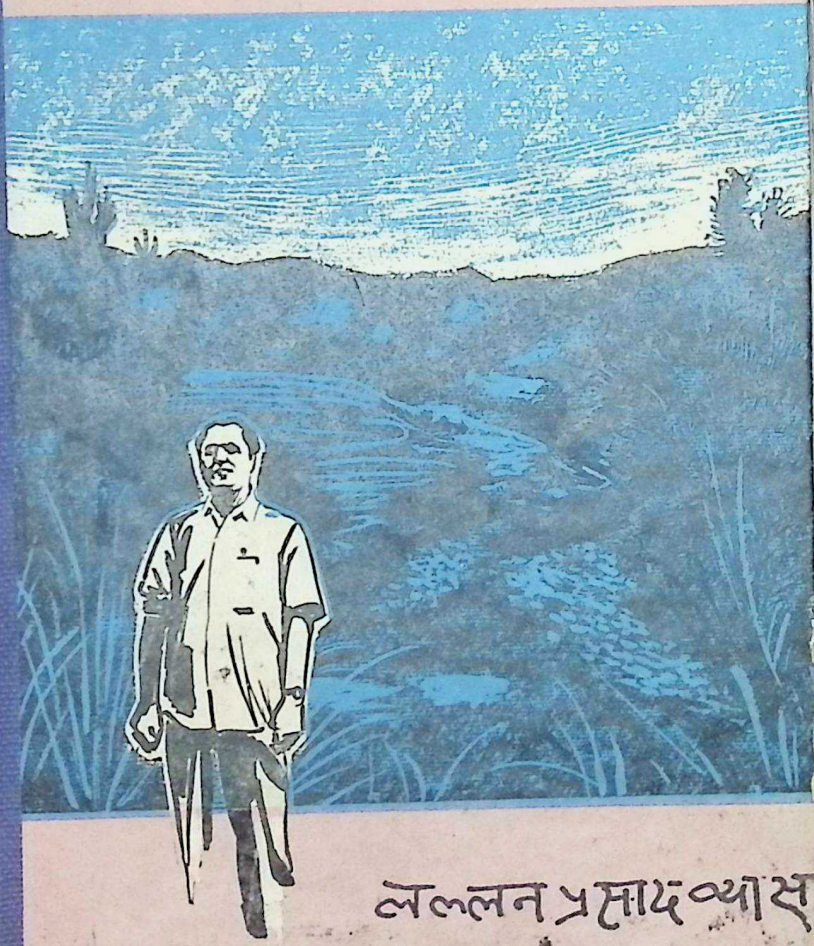

लल्लन प्रसाद व्यास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri,Funding: MIDF

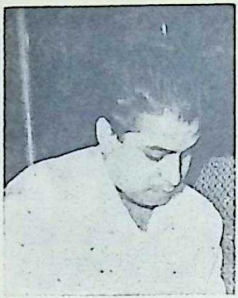

लेखक

प्रतिभावान् लेखक तथा प्रतिष्ठित पत्रकारके रूपमें **श्री लल्लन प्रसाद व्यास, एम. ए.** का नाम हिन्दी-जगत् में सुपरिचित है। आप का जन्म सन् १९३३ में उत्तर प्रदेश के 'बहराइच' नामक स्थान में गुजराती औदीच्य ब्राह्मण परिवार में हुआ है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम. ए. करके आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया। लखनऊ के 'स्वतन्त्र भारत' आदि अनेक दैनिक पत्रों में सम्पादन करने के पश्चात् आपने 'ज्ञान भारती' साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन किया। आपकी छोटी-बड़ी सात पुस्तकों में तीन पुस्तकें दक्षिण-पूर्वी एशिया के सम्बन्ध में हैं। दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों की आपने अब तक दो बार यात्रा की है। सम्प्रति आप प्राच्य संस्कृति परिषद् (कौंसिल फॉर कल्चरल रिलेशन्स इन ईस्ट) के महामन्त्री हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

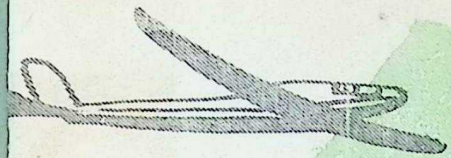

एक मुसाफिर एक दुनिया

ललन प्रसाद व्यास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

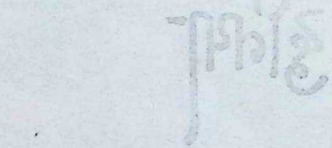

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक मुसाफिर : एक दुनिया

[रोचक यात्रा-संस्मरण]

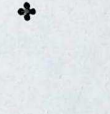

लल्लन प्रसाद व्यास

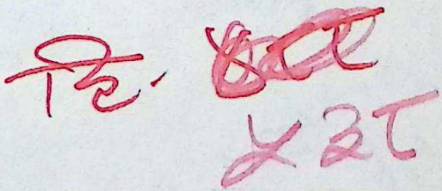

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

वाराणसी–१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

EK MUSAFIR : EK DUNIYA—TRAVEL LITERATURE
By Lallan Prasad Vyas

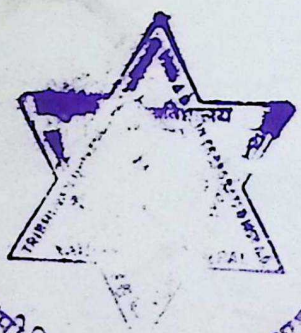

प्रथम संस्करण
११००
फरवरी '६६

मूल्य
१०० रुपये

प्रकाशक
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पो. बॉक्स नं. ७०, पिशाचमोचन
वाराणसी–१

मुद्रक
राष्ट्रीय प्रेस
सेनपुरा
वाराणसी–१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के कारण हिन्देशिया इससे पहले मलयेशिया के प्रश्न पर कुछ चुप था, अब उसके (वेस्ट इरियन समस्या) सुलझ जाने के बाद वह पूरी तरह से ताल ठोक कर सामने आ गया और कालांतर में उत्तरी बोनियो की मलयेशियाई सीमा के अन्दर अपने छापामार सैनिक भी भेज दिये जिसे मलयेशिया ने "नग्न आक्रमण" बताया।

इसीलिए विगत जून माह में मनीला में जब मलयेशिया और हिन्देशिया का शिखर सम्मेलन हुआ और राष्ट्रपति सुकर्ण ने उक्त छापामारों को मलयेशिया सीमा से वापस मँगाना अस्वीकार कर दिया तो इसी कारण उक्त सम्मेलन अकस्मात समाप्त हो गया और समझौते की समस्त आशायें धूमिल पड़ गयीं। और अब हाल में मुख्य मलय प्रदेश के दक्षिण में छतरीवालों को भेज कर तो हिन्देशिया ने इस विवाद को बहुत गम्भीरता प्रदान कर दी। राष्ट्रपति सुकर्ण 'मलयेशिया को कुचलने' की अपनी घोषित नीति पर अटल हैं। इसके लिये उन्होंने रूस से पर्याप्त सैनिक सहायता भी ली है। मलयेशिया के प्रधान मंत्री टुंकु अब्दुल रहमान ने भी अमेरिका और ब्रिटेन जाकर अधिक सैनिक सहायता के लिए प्रयास किया। वैसे वह पहले से ही ब्रिटेन से एक सैनिक संधि द्वारा बँधा हुआ है और मलयेशिया के विभिन्न स्थानों पर ब्रिटेन के सैनिक अड्डे भी विद्यमान हैं।

भारत की नीति

मलयेशिया के सम्बन्ध में जहाँ तक भारतीय नीति का प्रश्न है, भारत ने सदैव मलयेशिया संघ के ध्येय और अस्तित्व का समर्थन किया है। वह सिद्धान्ततः यह भी मानता है कि किसी भी देश की सीमाओं में विदेशी सेना का रहना अनुचित है। परन्तु वह अनेक कारणों से हिन्देशिया की खुली निन्दा नहीं कर सका है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक मुसाफिर : एक दुनिया

मैं जब गत जुलाई माह में मलयेशिया गया था तो उप समय यहाँ के प्रधान मंत्री टुंकु अब्दुल रहमान ब्रिटेन के दौरे पर थे। अतएव मैं कार्यकारी प्रधान मंत्री हाजी अब्दुल टुन रज्जाक से मिला और इस सम्बन्ध में बातचीत की। बातचीत में उन्होंने स्पष्ट कहा कि भारत को मलयेशिया पर आक्रमण की खुली निन्दा करनी चाहिये जिस प्रकार मलयेशिया ने चीनी आक्रमण के समय उसके विरुद्ध की थी। मैं उनसे पत्रकार की हैसियत से मिला था अतएव उनके विचार सुन ही सकता था, अपने या अपने देश के विचार उनके सामने रख नहीं सकता था। परन्तु यह प्रश्न निश्चय ही बहुत पेचीदा हो गया है और इसमें भारत की स्थिति बहुत नाजुक है क्योंकि यह झगड़ा उसके दो मित्रों के बीच का है—भले ही मित्रता की घनिष्टता में अंतर हो। जहाँ तक चीनी आक्रमण का सम्बन्ध था, चीन मलयेशिया का भी दुश्मन था। फिर भी भारत ने यह प्रश्न दोस्त और दुश्मन के दृष्टिकोण से ही नहीं देखा। उसने मलयेशिया के अस्तित्व का सदैव पक्ष लिया। हाल में हिन्देशिया में हुए अफ्रीकी एशियाई तैयारी सम्मेलन में भी भारत ने मलयेशिया को शामिल करने के लिये जोरदार वकालत की थी, भले ही उसे कश्मीर के प्रश्न पर उसकी कीमत चुकानी पड़ी।

हां, उसके दो मित्रों के इस संघर्ष में भारत से इतनी अपेक्षा तो ठीक है कि वह अपने प्रभाव का उपयोग करके रूस पर यह दबाव डाले कि वह इन दोनों के झगड़ों से दूर रहे। ब्रिटेन मलयेशिया का साथ दे ही रहा था, अमेरिका भी खुलेआम यदि आ गया तो एक ओर ब्रिटेन और अमेरिका तथा दूसरी ओर रूस और चीन हो जायेंगे तथा यह मामला विश्वयुद्ध का कारण बन सकता है। साथ ही इसके फलस्वरूप हिन्देशिया साम्यवादी गुट में भी पूरी तरह से जा सकता है।

केन्द्रीय पुस्तकालय

९२६४८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

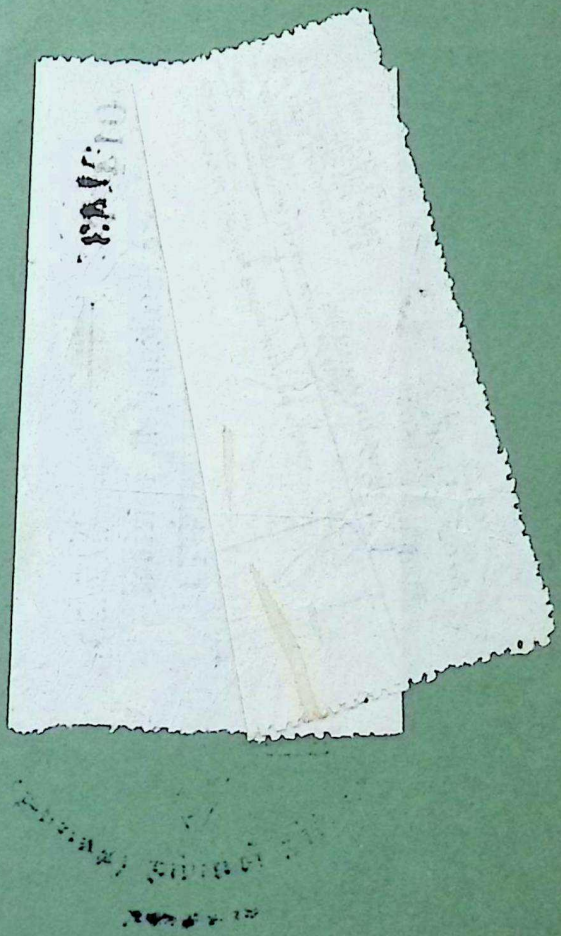

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पोस्ट बॉक्स नं. ७०, पिशाचमोचन
वाराणसी–१

क. मुद्रक : विद्या मन्दिर प्रेस (प्रा.) लि०, मानमन्दिर वाराणसी–१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu